बाल
किलकारी
(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)
वर्ष – 2, अंक-3
मूल्य 10/-
मार्च 2016

किलकारी लाल

'नदियों की शुद्ध धारा से
हम अपना चेहरा धोएँगे।
नई शुरूआत और नए रंग से
नवजीवन का बीज बोएँगे।।''

' हम सभी बच्चे हैं। पर दिल के सच्चे हैं। थोड़ा नादान भी हैं, तो थोड़ा शैतान भी। हमारा चंचल मन हर समय कुछ–न–कुछ सोचता रहता है। कभी चिड़ियों की तरह चहचहाना, तो कभी खुद से .... खुद ही बतिया लेना। वहीं हम अपनी माँ की गोद से उतरकर धरती पर पाँव रखने लगते हैं, और पिताजी की उँगली पकड़ चलना शुरू कर देते हैं। यहीं से हम सभी बच्चों की धीरे–धीरे एक नयी शुरूआत होने लगती है। नया शब्द सुनते ही हमारे मन में कुछ नया उत्पन्न होने लगता है। कुछ ऐसा, जो कि नया है। नदियों की थर थराहट हमारे अंदर एक डर बैठा देती है कि कहीं वह अपनी सीमा पार न कर ले, और नई शुरूआत होगी उन नदियों की कलकलाहट की, उनकी सुन्दरता की, और उनके शुद्ध जल की, जिसे छूकर हम यह कह सकें कि यह भारत का अमृत है। जंगल में रहने वाले सारे जानवरों में यह भय होता है कि कहीं आज गोली उनके सीने में न लगे और नई शुरूआत होगी, उन जानवरों को बचाकर उनपर प्रेम व दया दिखाकर।

जब अण्डे में से चूजा निकलता है और बड़ा हो जाता है, तब नई शुरूआत होती है उस नादान परिंदे की जो अब निडर आसमान में उड़ रहा है। जब किसी बीज से एक छोटा–सा हरा तना निकलता है और भरण–पोषण के साथ बड़ा होता है, तब नई शुरूआत होती है उन पेड़ों की, जो हमें छाँव देते हैं और मीठे–मीठे स्वादिष्ट फल भी, और हम उन्हें काटकर नाश कर देते हैं तो नई शुरूआत होगी उन पेड़ों को बचाकर। प्रकृति के बाद आखिरी में नई शुरूआत करनी है हमें हमारे अंदर। एक ऐसी शुरूआत, जिससे हमारी नदियाँ शुद्ध हो सकें, जानवर निडर जंगलों में रह सकें, चिड़ियाँ हमें अपना दोस्त मानें और पेड़ यह कह सकें कि मनुष्यों में भी हुई है, एक नई शुरूआत। तो दोस्तो ! आपकी भी कुछ ऐसी ही शुरूआत होगी न इस बार होली की पहले नटखट–चटपटे रंगों से?

मुनटुन एवं रौशन

प्रेरक प्रसंग

दोस्ती के हाथ

स्वामी रामतीर्थ जहाज द्वारा जापान से अमेरिका जा रहे थे। जब सैनक्रपान्सिको बन्दगाह आया डेक, तो सब लोग उतरने लगे, लेकिन स्वामीजी निश्चिन्त भाव से डेक पर हीं टहलने लगे। एक अमरीकी का जब उनकी ओर ध्यान गया, तो उसने पूछा–''महाशय! आपका सामान कहाँ है?''

''मेरे शरीर पर ही है।''

''क्या आपके पास पैसे भी हीं है''

''नहीं,'' स्वामी जी ने उत्तर दिया।

''तब आपक जीवन कैसे चलता है?''

''सबके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार ही मेरा जीवन है। जब मुझे प्यास लगती है तो पानी मिल जाता है। जब भूख लगती है, तो कोई रोटी का टुकड़ा दे ही देता है।''

''क्या अमेरिका में आपका कोई दोस्त है?''

''हाँ ! है, क्यों नहीं?एक अमरीकी मेरा दोस्त है,'' और यह कहकर उन्होंने उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा ''मेरा दोस्त यह है।''

उनके इस आत्मीयतापूर्ण स्पर्श का उस पर जादू सा असर पड़ा। उसे ऐसा महसूस हुआ, मानो उनके साथ उसकी पुरानी मित्रता है। वह एक सच्चे दोस्त की भाँति उनका मित्र हो गया। इसके बाद स्वामी जी जब कभी भी सैनफ्रान्सिस्को आये, उसने उन्हें अपने यहाँ ही सम्मानपूर्ण रखा और उनका बराबर ख्याल किया ।

ऐ स्वच्छन्द प्रकृति

ऐ स्वच्छन्द प्रकृति,
मैं कुछ तुम–सा हूँ ।
साफ–शीतल ह्दय वाला,
बच्चा मासूम–सा हूँ।

अँधियारी रातों में मैं,
चाँद से बातें करता हूँ
कभी तो आ जाओ घर मेरे,
उससे हरदम कहता हूँ।

जीवन के कोरे कागज पर,
कल्पनाओं के चित्रा उकेरता।
अपने बचकाने सपनों के
मैं उनमें ही रंग विखेरता।

मैं तुम्हें अपना जान,
मैं बात करूँ
मन मेरा यह चाहता कि,
हर पल नई शुरूआत करूँ।

अभिनंदन गोपाल

विशेष कविता

वे मुझे रोकते हैं
धूल में नहाने से
जैसे चिड़ियाँ नहाती हैं,
वे हँसने भी नहीं देते
जी खोलकर
जैसे दुनिया के सभी
फूल हँसते हैं।
मुझे समझ में नहीं आता
वे क्या पढ़ाते हैं
उसमें न नदी होती , न पहाड़
न गीत गाते झरने।
मेरी नन्हीं–सी आँखों में
जो बसा है जंगल, उसमें
किसी भी पेड़ का
एक पत्ता छूकर नहीं देखा है
मेरे शिक्षक ने।
मैं चाहती तो हूँ पढ़ूँ, पर
शिक्षक मुझे वैसे नहीं पढ़ाते
जैसे मैं चाहती हूँ।

शुक्ला चौधरी

माथापच्ची

एक A^4 साइज का पेपर लें और एक बार में कैंची से ऐसा काटें कि दी .... इस आकार का बन जाये।

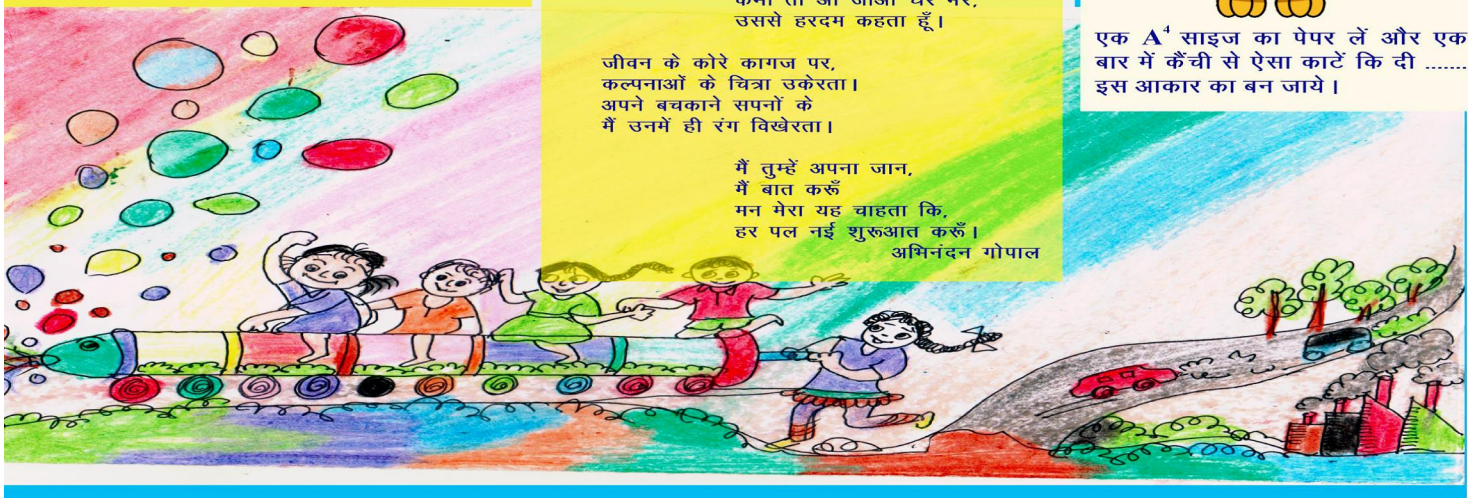

नन्हें कलाकार

हमारे प्रयास से

विद्यालय से छुट्टी होने के बाद रतन वापस अपने घर की ओर कदम बढ़ाते चला आ रहा था। उसके चेहरे पर गजब मुस्कुराहट थी। आँखों में कुछ करने की लालसा झलक रही थी। उसने घर पहुँचते ही सबसे पहले अपना बस्ता रखा, खाना खाया और चल पड़ा अपने मित्र का घर। देखा–उसका दरवाजा बन्द था उसने बाहर से आवाज लगाई, ''अरे चिंटू, दरवाजा खोलो।'' ''हाँ कौन?अंदर से आवाज आयी। ''आंटी मैं उसका दोस्त रतन।'' चिन्टू की माँ दरवाजा खोलते हुए, बोली '' अरे बेटा, क्या कोई बात है?'' ''नहीं आंटी'' वह कहते हुए चला गया। रतन दौड़ते–दौड़ते खेल के मैदान में पहुँचा। चिन्टू भी वहीं था। ''अरे रतन आ गया?'' बंटी और सन्नी कहाँ हैं? चिन्टू ने रतन से पूछा। ''पता नहीं, पर आता ही होगा। वो देखो, आ गया हैं।'' रतन बोला । फिर उसने आगे पूछा अरे बंटी, सन्नी कल जो हम लोगों ने मिलकर प्लान किया था, याद है न!'' ''हाँ–हाँ मुझे याद है।'' पर तुमलोग भूल जाओ मैं तुम्हारे प्लान में साथ देने वाला नहीं हूँ।'' ''क्या?'' रतन और चिन्टू ने एक साथ आश्चर्य चकित होते हुए सवाल किया। ''हाँ–हाँ'' भूल जाओ बंटी और सन्नी ने कहा। पर कल तो तुमने हमारे साथ वादा किया था कि कुछ भी हो जाये, हम इस काम से हटेंगे नहीं'' रतन ने कहा। ''हाँ सन्नी, यह गलत बात है, वादा करके तोड़ना। अगर तुम्हें यह प्लान अच्छी नहीं लगी थी, तो तुम शामिल ही नहीं होते। ऐसे भरोसा तोड़ना क्या अच्छी आदत है?'' चिन्टू ने कहा। ''छोड़ो कल की बातें हमें तुम्हारे साथ समय नहीं गँवाना है। बंटी ने कहा। ''हाँ चलो, हम सब क्रिकेट खेलने चलते हैं।'' सन्नी ने कहा, और वह दोनों वहाँ से चले गए।

''रतन और चिन्टू अपने में विचार करने लगे। अब क्या करें हम?'' चिन्टू ने पूछा। दुनिया चाहे कुछ भी करे हमें उससे मतलब नहीं। ''हम दोनों ने ये वादे किए हैं, तो पूरा करके ही रहेंगे। चलो शुरूआत अभी और यहीं से करते हैं।'' रतन ने कहा, और इनदोनों ने काम करना शुरू किया। इस खेल के मैदान में भी जहाँ–तहाँ कचरा फैला हुआ था। उनसब कचरे को उठा–उठाकर सारे कचरे को कूड़ेदान में डाल दिया। मैदान साफ–साफ दिखने लगा। कुछ बच्चे वहाँ खेल रहे थे। उन्हें इन दोनों ने मिलकर समझाया, ''भाई देखो, यह मैदान हमारा और हम ही लोग न यहाँ खेलते हैं। इसे साफ रखना हमारा फर्ज है तो हम सब अगली बार से ध्यान रखेंगे कि कचरे इधर–उधर फेंकने के बजाये इसे कूड़ेदान में डालेंगे। बिस्कुट का रैपर हो या फिर टॉफी का। यह कह वह आगे बढ़ चला सूरज ढलने वाला था। सभी पक्षी अपने–अपने घोंसले में जा रहे थे। चीं, चीं, चूँ, चूँ की आवाजें फैल रही थी। पेड़–पौधे भी झूम रहे थे। गुनगुना रहे थे। ऐसे लग रहा था, जैसे–वे भी सोने जा रहे हों। रतन और चिन्टू अपने वादे पर अड़े रहे। जहाँ भी कुछ कचरे दिखते थे वह उसी वक्त उसे उठाकर कुड़ेदान में डाल देते। कई बार ऐसा होता था। यह दोनों कचरे को उठाकर डाल देते थे, और बंटी, सन्नी इसे दुबारा मेहनत करवाने के लिए खाली समय सुनसान पाकर कूड़ेदान को उलट–पलट देते थे, और कचरा फैला दिया करते थे। लेकिन फिर भी रतन और चिन्टू के दिमाग में कभी भी यह बात नहीं आयी कि हम अब यह नहीं करेंगे। रतन और चिन्टू की चर्चा पूरे गाँव में फैलने लगी। उनकी बड़ाई भी होने लगी। रतन और चिन्टू की देखा–देखी आज पूरा गाँव बदल–सा गया है। रतन और चिन्टू के इस प्रयास से मानो गाँव का नया रंग–रूप ही बदल गया है। तभी रतन मुस्कुराते हुए चिन्टू से बोला, ''यार लगता है हमारी प्रयास ने रंग लाया।'' इतना सुन चिन्टू यूँ ही बोला, ''मित्र! लगता नहीं यह हकीकत है। देखो हमारे इस प्रयास से आज पूरे गाँव के लोग हमारे प्रयास में शामिल हो गए हैं। अब जहाँ–तहाँ कुड़े–कचरे नहीं फेंका करते हैं, बल्कि उनके स्थान पर ही डाला जाता है।'' इतना कह दोनों मित्र एक दूसरे के कंधे पर हाथ रखकर चल दिए। फिर से एक नयी शुरूआत की ओर।

प्रवीण कुमार
वर्ग –Vth

वह नवजात

आज वह आया है
इस दुनिया में,
वह एक नन्हीं कोंपल
पलकों से आँखों को मीचे
सूरज की पहली किरण ने उसे चूमा है
उसे हवाओं ने गले लगाया
अपनी नन्हीं कोमल उँगलियों से
माँ को उसने अभी छुआ है
हाँ, यह उसका पहला स्पर्श है
वह नवजात
कभी मुस्काता, कभी रोता
अपनी माँ के तन से दुबके
कितनी ही बेसुधता में
मस्तमौला हो दूध पीता है
उसकी माँ को
न जाने कौन–से सपनों में डूबा
वह नींद में भी हँसता है।

अतुल रॉय
वर्ग – IX[th]

खेल

नकल पहचानो

चलो एक नया खेल खेलते हैं। इस खेल का नाम है 'नकल पहचानो' इस खेल में जितने चाहे, उतने बच्चे खेल सकते हैं। पहले सभी एक जगह इकट्ठे होकर गोलाकार में बैठ जायें। उसमें से एक बच्चा उठकर गोल–गोल घूमेगा। सारे बच्चे गीत गाएँगे–

''अकड़म–बकड़म गोल चकड़म।
दादी की लाठी,
दादा का चश्मा,
गोल–गोल घूमे अपना बकरा।''

सारे बच्चे इस गीत को पाँच बार दुहरायेंगे और वह बच्चा तब तक घूमते रहेगा। अंतिम बार में वह बच्चा जिस बच्चे के पास रूकेगा। उस बच्चे को उठकर किसी की भी नकल करनी होगी, जैसे– जानवर या किसी फिल्म स्टार की बाकी बच्चों को उसका नाम बताना है कि वह किसकी नकल कर रहा है। जवाब आ जाने के बाद फिर से सारे बच्चे कविता गाएँगे और नकल करने वाला दोस्त गोल–गोल घूमेगा। इसी तरह खेल आगे बढ़ते जाएगा। कैसा लगा यह खेल खेलने में?फिर अगली बार मिलेंगे दूसरे खेल खेलाने के लिए।

तुलसी लवली

बूझो–बुझौअल

1. न देखे न बोले
   फिर भी भेद खोले।
2. गोल–गोल चेहरा
   पेट से रिश्ता गहरा।
3. लाल डिबिया पीला, खोल
   भीतर रखे मोती के दाने।
4. मैं छोटा फकीर
   मेरे पेट में है लकीर।
5. सरपट दौड़े हाथ न आये
   घड़ियाँ उसका नाम बताये।
6. एक छोटा–सा बंदर
   जो उछले पानी के अंदर।

बबलू बबली के चुटकुले

पुलिस : तुम्हें कल सुबह 5 बजे फाँसी दी जायेगी।
बबलू : जोर–जोर–से हँसने लगा, ''हा–हा–हा–हा... !''
पुलिस : हँस क्यों रहे हो?
बबलू : मैं तो उठता ही हूँ 8 बजे ।

●

बबलू : बताओ कि पत्थर पानी में क्यों डूब जाता है?
बबली : क्योंकि बेचारे को तैरना नहीं आता।

●

बबली : आकाशवाणी वाले तो सफेद झूठ बोलते हैं।
बबलू : वह कैसे?
बबली : देखो न बबलू, बोलते तो जमीन से हैं, और कहते हैं, यह आकाशवाणी है।

●

बबलू : अगर मैं प्रधानमंत्री बन जाऊँगा, तो देश की तकदीर ही बदल दूँगा।
बबली : पहले चप्पल तो बदल लो, सुबह से मेरी पहनी हुई है।

●

बबलू : रात में अपने मोबाईल फोन को चार्ज मत किया करो। मैंने सुना है कि वे फट जाते हैं।
बबली : चिंता मत करो, मैंने बैटरी निकाल ली है।

खोजबीन

पता है दोस्तो! सबसे पहले पेड़–पौधों की उत्पत्ति लगभग दो अरब वर्ष पहले समुद्र में हुई थी। उस समय धरती जीवन रहित थी। इसके बाद पहले कुछ छोटे–छोटे पौधे पनपे। इनका जन्म एक प्रकार की समुद्री घास से हुआ था। कुछ करोड़ वर्ष बाद धरती पर काफी संख्या में पेड़–पौधे उगने लगे। दोस्तो! यह तो बहुत खुशी की बात है। पर पता है–पहले उगने वाले पौधे उथले पानी में उगते और रहते थे। उनकी जड़ें होती थीं, और वे उस प्रारंभिक काल के वातावरण में से कार्बनडाइऑक्साइड ले सकते थे। पर कुछ समय बाद धरती पर इतने पेड़–पौधे हो गए थे कि भूकंप आदि कारणों से वे धरती के नीचे दब गये।

देवदार और चीड़ आदि का जन्म भी उसी समय हुआ था। इनके बीज शंकु के आकार के होते थे। सारे पर्वतीय प्रदेश आज इन वृक्षों से ढँके हुए हैं। इसके बाद फूल वाले पेड़–पौधों का जन्म हुआ। धीरे–धीरे इनकी किस्में और संख्या बढ़ती गई। आज तो फूल वाले पौधे सभी जगह दिखाई देते हैं। तो दोस्तो! इस प्रकार धरती पर अनेक पेड़–पौधों का विकास हुआ।

कुछ नया करें

जुट से गणेश जी बनाएँ

जूट यानी मुलायम पतली रस्सी, जिन्हें हम हमेशा बाँधने या कुछ टाँगने के काम लाते हैं पर काम हो जाने पर जो जूट बच जाते हैं वह अधिकतर रखे रह जाते हैं। जूट से अनेक तरह की प्यारी चीजें बनाना सीखी हैं, उनमें से सबसे अनोखे गणेश जी हैं और यह बहुत ही आसान है।

विधि :– सबसे पहले कोई पेज लें फिर उस पेज को कोण का आकार दें। ध्यान रहे, कोण न ज्यादा मोटा हो, न ज्यादा पतला हो। जूट को गोंद की मदद से चिपका दें। उस कोण के अंदर पतली वायर या छड़ दोहरा करके डाल दें। ध्यान रहे छड़ का नुकीला हिस्सा कोण के अंदर हो। अब कोई भी कागज बहुत छोटे–छोटे टुकड़ों में फाड़ लें। कोण के अंदर सारे कागज के टुकड़े अच्छी तरह से भर दें। कोण का ऊपरी सतह को गोंद की सहायता से साट दें। ध्यान रहे–छड़ का ऊपरी मुड़ा हुआ हिस्सा टाँगने के लिए निकला रहे। अब कोण में जुट से गोल–गोल लपेटें। कान के लिए दो टिकियाँ जुट से बनाएँ। टिकियों को थोड़ा टेंढ़ा करके कान का आकार दें। थोड़े पतले कुट पर मुकुट का आकार दें। उसे काट लें अब इसके आगे वाली सतह पर जुट को लपेटें। कोण के ऊपरी हिस्से पर गोंद की मदद से मुकुट को चिपकाएँ। फिर दोनों कान मुकुट के थोड़े नीचे चिपकाएँ। गणेश जी की आँखें और भौं स्केच पेन की सहायता से बनाएँ। आप चाहें तो छोटे–छोटे मोतियों से गणेश जी को सजा भी सकते हैं।

प्रीति वर्मा, वर्ग दशम्

फिर से सीख पाता

दुनिया में मैं नन्हा बच्चा,
बनकर आया था।
जिन्दगी में मैं नई शुरूआत,
करना चाहा था।
जूनून के साथ आगे बढ़ता गया,
थोड़ी दूर चलके एकदम ठहर गया।
कुछ न समझ में आया तो,
अँधेरे में मैं समा गया।
मेरी भावनाएँ सिरे से,
शुरूआत करना चाहती थी।
पर अब काफी देर हो चुकी थी तो,
वो जी भरकर रोना चाहती थी।
काश! दुनिया में मैं नन्हा बच्चा,
बनकर फिर आता।
अपनी छोटी–छोटी गलतियों से,
फिर से सीख पाता।

गौरव राज
वर्ग–VIIIth

कहानी

चाय की दुकान

''क्यों मियाँ कैसे हो? सब ठीक तो है न!'' इकबाल मियाँ ने जैसे खुशी में चाय वाले से पूछ लिया। ''ह..म..तो ठीक हैं भई। वैसे लगता है कि आप आज बड़े खुशमिजाज हैं ? क्यों, क्या बात है?'' बूढ़े चाय वाले ने थोड़ी कँपकँपाती आवाज में कहा। तभी इकबाल मियाँ बोले, ''हाँ, बोलिये, बाबू कुछ ऐसी ही बात है कि जैसे खुशी तो हमारे कदम चूमने आ खड़ी हुई हो। अब उसकी खुशबू तो चेहरे पर तो फैलेगी ही ना। बोलिये बाबू याद है, हमदोनों बचपन के यार कैसे पढ़ाई किए बिना ही स्कूल से भाग लिया करते थे? कैसे हम किसी बूढ़े को देख उसे पुचकारते थे? हमदोनों में कोई फर्क नहीं था, बस तुम थोड़े बड़े थे, मैं थोड़ा छोटा।''

''हाँ–हाँ और हमारी शैतानियाँ दो नहीं चार हाथों से होती थी। इसलिए तो सब हमें जुड़वा पुकारते थे। कोई ट्रक–गाड़ी आती तो पीछे लटक जाया करते और हमें उतारने के लिए आखिरकार चालक को गाड़ी रोकनी पड़ती थी।'' चाय वाले ने चाय बनाते–बनाते कहा। फिर इकबाल मियां बोले, ''हम अक्सर मिट्टी को नाखूनों से भी खोदा करते थे, और हमारे नाखून ही टूट जाते थे।'' चाय वाला, ''हाँ और अम्माँ डाँटती तो पेड़ों पर चढ़ जाया करते थे। मूशल लेकर पीछे दौड़ पड़ती पर कभी हमें चोट भी लग जाती ना तो हमसे न बताती मगर छुप–छुपकर बहुत रोती।'' इकबाल मियाँ ने कहा पर अब्बा तो जैसे सिर्फ हम पर बोझ लादते रहते लेकिन हम तो हमेशा बचकर नौ दो ग्यारह हो जातें और इमली के पेड़ पर बैठ छोटे लड़कों को ऊपर से गिरा–गिराकर इमली खाने को देते। एक बार तो हमने कटहल के पेड़ पर भूत वाला भालू बनकर अफवाह फैला दी।'' बलिये बाबू मतलब की चाय वाला हँसते हुए बोला, ''हा–हा–हा–हा। कितना मजा आता था उन दिनों। वैसे इकबाल मियाँ तुमने तो चाय पी ही नहीं। मैं भी बातों में रह गया। लो मियाँ चाय पी लो।'' अभी इतना ही कहकर बलिया बाबू भी साथ में चाय पीने बैठने ही वाले थे कि तभी ताँगेवाला आया और हाँफते हुए बोला, ''अरे ओ बलिये बाबू, एक चाय इधर भी देना।''ताँगेवाले ने ताँगे से उतरकर माथे का पसीना पोंछते हुए उसी प्रकार हाँफ कर जरा धीमी आवाज में कहा, ''अरे , दिन भर धूप में ताँगा दौड़ाते–दौड़ाते पसीने ने तो जैसे माथे पर कब्जा ही कर लिया हो। फिर ये गरीबी जो है पीछा ही नहीं छोड़ती।'' तभी बलिये बाबू एक और चाय की कप लाते हुए बोला, ''अरे, ताँगे वाले बंशी बाबू, हमारे यहाँ तो सभी की यही बदहाली है। चाहे वो किसान हो, ताँगेवाले, मोची हों या फिर मुझ जैसा कोई चायवाला। बचपन में शैतानियाँ करके सिर्फ यही छोटे–मोटे काम करते हैं और फिर तो बस ... । बीच में ही इकबाल मियाँ ने चायवाले की दुकान पर हाथ रखते हुए कहा, ''अल्लाह न करे कि कभी ऐसा हो फिर इकबाल मियाँ को देखते हुए ताँगेवाले ने कहा, ''भई, अब इन बातों को याद करके क्या रोना?मुझे लगता है कि आपदोनों कुछ बातें कर रहे थे और मैंने जैसे बीच में टाँग अड़ा दी। बोलो इकबाल मियाँ हमें भी तो अपनी खुशी बयाँ करो।'' चायवाला, ''हाँ–हाँ, लो छोड़ दिया इन बातों को। वैसे मियाँ आप हमें बचपन की याद क्यूँ दिला रहे थे? खुशखबरी सब हमारी खुशी बाँटने को इतनी मशक्कत कर रहे हैं तो अब बता ही देते हैं। अरे, खुशखबरी ये है कि हमारा पोता अब कुछ ही दिनों में जन्म लेने वाला है।'' बलिये बाबू कँपकँपाती आवाज में ही बोले, ''चलो, अच्छी बात है। अब बस भगवान के आशीर्वाद से मुन्ना के दर्शन भी हो जाएँ तो और क्या दुआ है?''

ताँगेवाले बंशी बाबू ने कहा, ''अब तो इसी बात का इंतजार है कि **नवजात शिशु** जल्द ही जन्म ले ले।'' चाय की एक और घूँट पीते हुए इकबाल मियाँ ने कहा, ''मगर एक दुखद बात है बाबू। आज रात परिवार वाले शहर को जा रहे हैं, हमें भी साथ जाना है। वो क्या है न कि बच्चे का जन्म तो अस्पताल में ही होगा ना और अस्पताल तो गाँव में अभी बन ही रहा है। पर चिंता ना करो, मैं जल्द ही वापस आ जाऊँगा।'' जाने देने का मन तो नहीं कर रहा था, पर अब कर भी क्या सकते थे? कुछ दिनों बाद जब खुशी से मियाँ उसी दुकान पर आये तो देखा कि दुकान टूटी–फूटी और वीरान है। केतली, बिस्कुट, शीशे का डब्बा सबकुछ नीचे गिरा हुआ है। मियाँ की सोच यहीं अटकी हुई थी कि उधर मेरे पोते के जीवन की, मेरी खुशी की, मेरे यारों के अरमानों और न जाने कितने ही लोगों की उम्मीदों की शुरूआत हुई तो मैंने अपने याद को ही खो दिया?और फकत इसी सुन्न–सी सोच के साथ मियाँ मन आँखें लिये घुटनों के बल उसी चाय का स्वाद, यार की यारी और काली हो चुकी केतली को निहारते हुए वहीं बैठे हुए थे।

प्रियंतरा भारती, वर्ग –Vth

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015

कैमरे में किलकारी

किलकारी में गणतंत्र दिवस

एक नया जीवन

सुबह–सुबह चिड़ियों की चहचहाटें सुनकर वंशु बिस्तर पर से उठा। आँखें मलते हुए बाहर निकला तो लाल किरण उसकी आँखों पर पड़ी। ठंडी–ठंडी हवा चल रही थी। वंशु यह सब देखता रहा। प्रकृति का इतना सुन्दर नजारा जैसे वह पहली बार देख रहा हो?तभी उसकी माँ ने आवाज लगायी, ''वंशु बेटा...वंशु बेटा...।'' दौड़ते हुए वंशु घर के अंदर गया। ''स्कूल जाना है, जल्दी से तैयार हो जाओ।'' उसकी माँ ने कहा। वंशु थोड़ा उदास हो गया, फिर भी उसे स्कूल जाना पड़ा।

रास्ते में उसे याद आया–अरे आज तो पर्यावरण दिवस है न! मैं तो भूल ही गया था। वंश ने क्लास में जाकर बैठा। जब क्लास में टीचर आयीं तो सभी बच्चे खड़े होकर एक साथ बोले, गुड मॉर्निंग मैम। ''गुड मॉर्निंग बच्चो!'' टीचर ने भी तुरंत जवाब दिया। फिर बोली, ''आज पर्यावरण दिवस है, सभी को पता है न!'' ''यश मैम''। सभी बच्चे खुश होकर बोले। तभी वंशु खड़ा होकर टीचर से सवाल किया, मैम, हम बच्चों को पर्यावरण के बारे में कुछ बताइए न! हमलोग इसके बारे में बहुत कुछ नहीं जानते हैं। जरूर बताऊँगी बच्चो।'' टीचर बोली ''इसके बिना हम जीवित नहीं रह सकते। लेकिन आजकल पर्यावरण की समस्या को लेकर विश्व के सारे देश चिंतित हैं और वे ऊर्जा हेतु नए–नए विकल्पों की खोज में लगे हैं, जिससे प्रदूषण को खत्म किया जा सके। तो बच्चो, हमलोगों को भी पर्यावरण बचाने में सहयोग करना चाहिए न।'' ''यश मैम!'' सभी बच्चे एक साथ बोले। फिर वंशु खड़ा होकर पूछा, ''लेकिन मैम, इसे बचाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?'' इसे बचाने के लिए पेड़–पौधे लगाने चाहिए, कूड़े–कचरे को एक गड्ढ़ा खोदकर डालना चाहिए। ऊर्जा के साधन कोयला, गैस, पेट्रोलियम सीमित मात्रा में उपयोग करना चाहिए। इतनी सारी बातें जानकर सभी बच्चे खुश हो गए। जब छुट्टी हुई तो सब घर जाने लगे। वंशु भी घर जा रहा था। रास्ते में यह सोचते–सोचते कि मैं आज पर्यावरण दिवस पर क्या करूँ? अचानक उसे रोड के किनारे एक छोटा–सा पेड़ दिखा, जो मुरझाया हुआ और सूखने वाला था। वंशु मन–ही–मन सोचने लगा 'अगर यह पेड़ दो–चार दिन ऐसे ही रहा तो यह सूख जायेगा। लेकिन मैं इसे सूखने नहीं दूँगा।' वंशु हिम्मत से बोला। वह उस पेड़ को उखाड़कर अपने घर ले गया। पेड़ उसने घर के पीछे लगाया और उसे एक नया जीवन देकर वंशु ने एक नई शुरूआत की। यह सब उसकी माँ देख रही थी और उसने उसे गले से लगा लिया।

सम्राट समीर
वर्ग –IXth

लघुकथा

शुरूआत

वो अनपढ़ था। अखबार पढ़ नहीं सकता। जहाँ तक टी.वी. देखने की बात थी तो दिनभर रिक्शा चलाने के बाद फुर्सत कहाँ। फिर भी उड़ती खबर कानों तक पहुँच चुकी थीं। सरकार ने आदेश दिया कि एक अप्रैल से कई नए कानून पारित होंगे। जिसमें कुछ शिक्षा और नौकरी पेशा लोगों से जुड़ा था। पर उसके मतलब का तो बस एक था 'शराब बंदी' बेचारा सोच में पड़ा था। दिनभर की थकान की मात्र यही एक दवा थी, जो रात में चढ़ती थी। अगर यह भी सहारा खत्म हो गया तो क्या होगा। यही सोचते सोचते वह आज कुछ ज्यादा ही पी गया। करीब आधी रात के बाद होश आया कि घर भी जाना है। पता नहीं क्यों आज रोज की तरह उसके पैर डगमगा नहीं रहे थे। घर पहुँच कर वह सीधे खाट पड़ पर गया। बच्चे और पत्नी डरे थे। कहीं रोज की तरह फिर मार न खानी पड़े, इसलिए बिना कुछ कहे वे भी जाकर सो गए। रात बी गई। सुबह उठकर अनमने ढंग से वह अपनी रोजगारी पर निकल पड़ा। दिनभर वह यही सोचता रहा, आज तो शराब मिलेगी नहीं। कल काम कैस होगा। जैसे तैसे दिन निकल गया। रात को वह इधर–उधर घूमता रहा इस आशा से कहीं कोई भट्ठी खुली हो। पर हर जगह पुलिस की गश्ती थी। थकान से चूर शरीर लिय वह घर पर पहुंचा पहली बार घर पर खाना खाया। और खाट पर गिर पड़ा। वह बेचैनी से करवटे बदलता रहा। करीब रात के तीसरे पहर उसे नींद आयी। जब आँखे खुली तो सूरज सिर पर आ चुका था। वह पत्नी पर झल्लाया पर उसे आश्चर्य हुआ कि आज भी उसके शरीर में रोज की तरह हीं स्फूर्ति थी। पर स्फूर्ति कहां से आयी। उसने रात को शराब देखी भी नहीं। थोड़ी ही देर में उसकी बच्चे आकर उससे लिपट गये। दूर खड़ी उसकी पत्नी उसके सवालों के जवाब में मुस्कुरा रही थी।

घुँघररू आनन्द

भेजें रचनाएँ

दोस्तो !

'बाल किलकारी अखबार' के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य–हम बच्चों की आवाज को बुलंद करना है और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारना है। आप अपनी लिखी हुई कहानी, कविता, लघुकथा, चुटकुले, पहेली, चित्र, आपबीती, खेल, अखबार पर प्रतिक्रिया या रचनाएँ भेज सकते हैं। रचना के साथ अपना नाम, वर्ग, विद्यालय का पता, सम्पर्क नम्बर अवश्य ही भेजें। चुनी गई रचनाएँ अगले अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

–बाल सम्पादक मंडल

तुम्हारी तरह

कोशिश करती हूँ मैं भी
तुम्हारी तरह अडिग रहना
हर मौसम में
तुम्हारी तरह बदलकर
खुश होना
सभी को देकर जिंदगी
उनकी रक्षा करना
जीना चाहती हूँ
तुम्हारी तरह
अपने–आपको बदलकर
करना चाहती हूँ
एक नई शुरूआत
तुम्हारी खुशबूओं की तरह
फैलाना चाहती हूँ खुशियाँ
भरकर रंग सभी में
हटाना चाहती हूँ
छोटे–से–छोटे दुःख को
तुम्हारी तरह
तुम हो सबसे अलग
मैं भी अलग रहना चाहती हूँ
तुम्हारी तरह।

तुलसी लवली

शुरूआत से

करनी है कुछ नई शुरूआत,
कुछ नई उमंगों के साथ,
रंग ले अच्छाई के रंग में,
पाकर बुराई से निजात।
बरसें खुशियाँ आसमान से,
बेईमानी खत्म हो बेईमान से,
चले हवाओं के संग ईमान से,
उड़े हौसलों की उड़ान से।
नदियाँ बहे, तेज धार से,
प्रदूषण न फैलाओ कार से,
आओ बदलें हम दुनिया को,
खुद, एक नई शुरूआत से।

युवराज सिंह
वर्ग – Vth

इस अंक के प्रतिभागी–
राहुल, युवराज, संजु, घुँघरु, गौरव, रीशु, पूजा, युवराज सिंह, तुलसी, दीपा, ज्योति, रौशन, स्वीटी, प्रीति वर्मा।
बाल सम्पादक–सम्राट, अभिनंदन, प्रियंतरा, मुनदुन, अतुल
संपादक–ज्योति परिहार, निदेशक, बिहार बाल भवन, किलकारी, पटना
कार्यकारी सम्पादक–राजीव रंजन श्रीवास्तव, **विशेष सहयोग**–वीरेन्द्र कु. पाठक
संयोजक– सुधीर कुमार
कार्यालय– बिहार बाल भवन सैदपुर, किलकारी, पटना–800004 (बिहार)

इस अंक के जवाब बुझो–बूझौवल
पत्र, रोटी, पान, अनार
गेहूँ, समय, मेढ़क

वेबसाइट: www.kilkaribihar.org
दूरभाष : 0612-3224919, 2661295 ई–मेल : info@kilkaribihar.org ब्लॉग : kilkaribihar.blogspost.in फेसबुक : www.facebook.com/kilkaribihar यूट्यूब : www.youtube.com/kilkaribihar